सोफिया (बुल्गारिया)
फरवरी १६, २००८

सन्देश संख्या १३५

सूफी–सन्त का तरीक़त, शरीअत, मारिफत और हकीकत

तरीक़त : कुछ मूलभूत नियमों (तरीका) के प्रति उपलब्धता ही गहरे धार्मिक जीवन की शुरुआत है । यह वैसा ही है जैसा कि योग–जीवन में यम–नियम तथा अहं–केन्द्रित संकीर्ण गतिविधियों के प्रति सजगता और इस तरह उनसे मुक्ति अर्थात् स्वाध्याय बताया जाता है ।

शरीअत : विनम्र होना, अहंकार रहित होना, कुछ विशिष्ट नहीं होना, समाज में प्रसिद्धि की चाहत के बिना अज्ञात के रूप में रहना शिष्ट होना है । यह क्रियायोग के आडम्बररहित एवं शान्तिपूर्वक तप में होने जैसा है । अर्थात् बिना किसी चाहत के प्रज्ञा में प्रतीक्षारत रहना ।

मारिफत : प्रतिक्षण विभेदकारी चित्त ''मैं'' के प्रति मरना (मर जाना) ही जीवन्त चैतन्य में होना है।

हकीकत : वास्तविक ''मैं'' एक व्यक्ति नहीं है बल्कि सम्पूर्ण मानवता है, सर्वव्यापी है । यह किसी भी प्रकार के विभाजन से रहित पूर्णता एवं दिव्यता है। यह क्रिया योग का ईश्वर–प्रणिधान है ।

धार्मिक–क्रान्ति सहजावस्था लाती है । यह मैं की समाप्ति तथा चैतन्य का उदय है ।

राजनीतिक–क्रान्ति एक शक्तिशाली राज्य की स्थापना करती है जिसमें चारों तरफ ''मैं'' की वृद्धि होती है और उसमें अन्तर्कलह का रूप केवल बदल जाता है ।

निर्विकल्प सजगता अनिश्चयता की अवस्था नहीं है । यह स्वार्थी विकल्पों के परे होना है ।

यदा अहं, तदा बन्धम्
यदा नाहं, तदा मोक्षम्

अर्थात्, जहाँ ''मैं'' है, वहाँ बन्धन है और जहाँ ''निर्–मैं'' है, वहाँ मुक्ति है ।

।। जय सन्त ।।